राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान,
उत्तराखण्ड
National Institute of Technology,
Uttarakhand

# Media Coverage

# May 2023

# जल्द शुरू होगा एनआईटी परिसर का निर्माण कार्य

संवाद न्यूज एजेंसी

**श्रीनगर।** एनआईटी (राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान) उत्तराखंड के श्रीनगर परिसर के द्वितीय चरण का निर्माण कार्य इसी माह से शुरू होने की उम्मीद है। निर्माण के लिए संस्थान ने कार्यदायी संस्था सीपीडब्लूडी (केंद्रीय लोक निर्माण विभाग) को बजट मुहैया करवा दिया है। वर्तमान में सीपीडब्लूडी की ठेकेदार के साथ अनुबंध कार्रवाई चल रही है।

एनआईटी उत्तराखंड के सुमाड़ी परिसर का निर्माण होने तक श्रीनगर परिसर में निर्माण कार्य किए जा रहे हैं। श्रीनगर परिसर के विस्तारीकरण के लिए संस्थान को रेशम फार्म और आईटीआई की भूमि मिल चुकी है। यहां प्रथम चरण में हॉस्टलों का निर्माण चल रहा है। अब द्वितीय चरण का भी काम शुरू होने वाला है।

**निर्माण के लिए संस्थान ने कार्यदायी संस्था को दे दिया है बजट**

इसके लिए 48 करोड़ रुपये का बजट स्वीकृत है। एनआईटी के निदेशक प्रो. एलके अवस्थी ने बताया कि निर्माण कार्य के लिए सीपीडब्लूडी की ओर से टेंडर आमंत्रित किए गए थे, लेकिन ठेकेदार 33 करोड़ रुपये में काम करने को तैयार है। ठेकेदार को काम आवंटित कर दिया गया है। इसके लिए एडवांस धनराशि भी दी जा चुकी है। वर्तमान में ठेकेदार व सीपीडब्लूडी के बीच अनुबंध संबंधी कार्रवाई चल रही है।

# 33 करोड़ से होगा एनआईटी का काम

**श्रीनगर।** एनआईटी के श्रीनगर परिसर में दूसरे फेज का निर्माण कार्य 33 करोड़ की लागत से होगा। एनआईटी के निदेशक प्रो. अवस्थी ने बताया कि एनआईटी के दूसरे फेज के लिए 48 करोड़ रुपये निर्माण कार्य के लिए आवंटित थे, लेकिन जो टेंडर खुला है वह 33 करोड़ का है। काम अवार्ड हो चुका है और एडवांस भी दे दिया गया है। उन्होंने कहा कि इस बजट से एनआईटी में डायरेटक्टर , डीन, एसोसिएट डीन के ऑफिस के साथ ही ई क्लास रूम आदि कॉम्पलैक्स बनेंगे।

# सबसे तेज प्रधान टाइम्स

## राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड में राज्य भाषा अनुवाद एवं संकाय कल्याण विभाग द्वारा संयुक्त रूप से एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया

गबर सिंह भण्डारी

हरिद्वार/श्रीनगर गढ़वाल (सबसे तेज प्रधान टाइम्स)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान श्रीनगर उत्तराखंड में एकदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें तकनीकी शिक्षा में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं राजभाषा के रूप में सरकारी कामकाज में इसके प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए संकाय सदस्यों ,अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्रों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। इन्हीं विचारों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखंड में राजभाषा अनुभाग एवं संकाय कल्याण विभाग द्वारा संयुक्त रूप से एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह संस्थान के प्रशासनिक भवन में स्थित सम्मलेन कक्ष में पारम्परिक रूप से दीप प्रज्वलन के साथ किया गया जिसमे संस्थान के माननीय निदेशक प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी बतौर मुख्य अतिथि और जगदीश राम पौरी, संयुक्त निदेशक, राजभाषा, शिक्षा मंत्रालय एवं मुकेश राते वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, शिक्षा मंत्रालय मुख्य व्याख्याता और विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में प्रोफेसर अवस्थी कहा कि भाषाई विविधता के बीच हिंदी भाषा , देश में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं में, सबसे अधिक प्रचलित और बोली जाने वाली भाषा है इसीलिए 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को राजकीय भाषा के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि किसी देश की प्रगति में उसकी भाषा और संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। हिंदी ने देश के सतत विकास में सदा ही अपना योगदान दिया है इसीलिए यह हमारी राजभाषा के साथ राष्ट्रीय एकता की भी भाषा है।

उन्होंने आगे कहा कि हिंदी भाषा में तकनीकी शिक्षा की पढ़ाई में जो सबसे बड़ी बाधा है वह यह है कि आधुनिक और गुणवत्तापूर्ण तकनिकी ज्ञान की पुस्तकें हिंदी भाषा में मौजूद नहीं है। प्रारंभिक स्तर पर सभी बच्चों की बौद्धिक क्षमता लगभग सामान होती। परन्तु हिंदी माध्यम से बारहवीं तक पढाई करने के बाद जब छात्र इंजीनियरिंग या मेडिकल की पढाई करने जाता है तो हिंदी माध्यम में किताबो के ना होने से उसके सामने चुनौती बढ़ जाती है और कई बार उसके प्रदर्शन में गिरावट आ जाती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने नयी शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा में भारतीयता और भारतीय सन्दर्भ में शिक्षण पर विशेष जोर दिया है। जिसके अंतर्गत अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) एवं शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अंग्रेजी में उपलब्ध ज्ञान -विज्ञान और तकनीकी पुस्तकों का हिंदी के साथ अन्य भारतीय भाषाओ में रूपांतरण को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। उन्होंने सभी संकाय सदस्यों से कहा कि कि इंजीनियरिंग प्रथम वर्ष के लिए हिंदी माध्यम में पुस्तकें उपलब्ध भी है और उसकी ई-कॉपी नाममात्र के मूल्य पर खरीदी जा सकती।

प्रोफेसर अवस्थी ने कहा कि इसी कड़ी में एन आई टी उत्तराखंड भी तकनीकी और विज्ञान की गतिविधियों के साथ हिंदी में लिखने के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहन देने कि लगातार प्रयत्न कर रहा है। जिसके लिए संस्थान में विभिन्न प्रकार के प्रभावी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही हिंदी को पत्र व्यवहार और सूचना के आदान प्रदान के लिए एक माध्यम के रूप में सुनिश्चित किया गया है । संस्थान के वेब पोर्टल पर हिंदी में भी जानकारी दी जा रही है, सारे पत्राचार अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी किये जा रहे है और वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी संस्करण भी संस्थान में प्रतिवर्ष उपलब्ध कराया जाता है ।

जगदीश राम पौरी ने उपस्थित लोगो को सम्बोधित किया और राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए भारत सरकार द्वारा राजभाषा अधिनियम की विभिन्न धाराओं में व्यक्त राजभाषा संबंधी प्रावधानों के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा की आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में भारत सरकार ने वर्ष 2023 के अंत तक सभी हिंदी भाषी राज्यों जैसे उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड ,मध्यप्रदेश, बिहार आदि में शत प्रतिशत प्रशासनिक पत्राचार हिंदी माध्यम में करने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने उपस्थितों लोगो को यह भी बताया कि राजभाषा संबंधी निर्देशों के अनुपालन में प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार की नीति को अपनाया गया है, लेकिन जान-बूझकर निर्देशों का उल्लंघन पाए जाने पर दंडात्मक कार्रवाई करने का प्रावधान भी रखा गया है। इसके अतिरिक्त जगदीश राम पौरी ने अपने व्याख्यान के दौरान हिन्दी में अभिलेखों/फाईलों/पत्रों/परिपत्रों पर कार्य करने हेतु वह अपना ज्ञान और अनुभव साझा किया।

कार्यशाला के अंत में कार्यक्रम के संचालक एवं प्रभारी कुलसचिव डॉ धर्मेंद्र त्रिपाठी ने सभी लोगो का धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा कि राजभाषा कार्यान्वयन भारतीय संविधान के निर्देशों के अनुपालन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। उन्होंने कहा कि सरकारी काम काज में हिंदी का अच्छे से उपयोग हो सके इसके लिए हिंदी भाषा का प्रशिक्षण और अभ्यास आवश्यक है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह हिंदी कार्यशाला सभी प्रतिभागियों के लिए सुरुचिपूर्ण और सूचनाप्रद रही है। जो भी महत्वपूर्ण बातें कार्यशाला में सीखी गई हैं उन्हें प्रतिभागी अपने-अपने कार्यक्षेत्र में अवश्य उपयोग में लाएँ और हिंदी प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दें।

# भाषा व संस्कृति का प्रगति में अहम योगदान

**जागरण संवाददाता, श्रीनगर गढ़वाल :** राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड श्रीनगर (एनआइटी) के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा कि किसी देश की प्रगति में उसकी भाषा और संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भाषायी विविधता के बीच भारत में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं में हिंदी भाषा सबसे अधिक प्रचलित और बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी भाषा ने देश के सतत विकास में सदा ही अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसीलिए 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को राजकीय भाषा के रूप में स्वीकार किया। एनआइटी उत्तराखंड श्रीनगर में हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार को लेकर आयोजित कार्यशाला के उद्घाटन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए उन्होंने यह विचार व्यक्त किए।

एनआइटी श्रीनगर में हिंदी भाषा को लेकर आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते एनआइटी निदेशक प्रो. ललित अवस्थी • जागरण

प्रो. अवस्थी ने कहा कि राजभाषा के साथ हिंदी राष्ट्रीय एकता की भी भाषा है। उन्होंने कहा कि तकनीकी शिक्षा की पढ़ाई को लेकर आधुनिक और गुणवत्तापूर्ण तकनीकी ज्ञान की पुस्तकें हिंदी भाषा में मौजूद नहीं हैं। हिंदी माध्यम से 12वीं तक पढ़ाई करने के बाद इंजीनियरिंग और मेडिकल की पढ़ाई करने वाले छात्र के सामने चुनौती भी बढ़ जाती है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से नई शिक्षा नीति में भारतीयता के साथ ही भारतीय संदर्भ में शिक्षण पर विशेष जोर दिया गया है। प्रो. ललित अवस्थी ने कहा कि केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय और तकनीकी शिक्षा परिषद की ओर से अंग्रेजी में उपलब्ध तकनीकी पाठ्य पुस्तकों का हिंदी के साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं में रूपांतरण को प्रोत्साहन भी दिया जा रहा है। उन्होंने एनआइटी की सभी फैकल्टी से कहा कि बीटेक प्रथम वर्ष के लिए हिंदी माध्यम में पुस्तकें उपलब्ध हैं। संस्थान में हिंदी को बढ़ावा देने को प्राथमिकता से कार्य किया जा रहा है। संस्थान के वेब पोर्टल पर हिंदी में भी जानकारियां दी जा रही हैं। विशिष्ट अतिथि केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के संयुक्त निदेशक राजभाषा जगदीशराम पौरी ने राजभाषा संबंधी प्रविधानों के बारे में विस्तार से बताया। कहा कि देश के सभी हिंदी भाषीय राज्यों में इस वर्ष के अंत तक भारत सरकार ने प्रशासनिक पत्राचार शत प्रतिशत हिंदी माध्यम में करने का लक्ष्य रखा है। पौरी ने कहा कि राजभाषा संबंधी निर्देशों के अनुपालन में प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार की नीति को अपनाया गया है।

जानबूझकर निर्देशों का उल्लंघन पाए जाने पर दंडात्मक कार्रवाई करने का भी प्रविधान है। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी मुकेश व एनआइटी के कुलसचिव डा. धर्मेंद्र त्रिपाठी ने भी विचार व्यक्त किए। एनआइटी में हिंदी भाषा को प्राथमिकता से बढ़ावा दिया जा रहा है।

**गढ़वाल की और भी खबरें पढ़ें**
**www.jagran.com**

# राजकीय कार्यों में हिन्दी के प्रयोग पर जोर

**श्रीनगर।** संसदीय राजभाषा समिति की पहली उपसमिति द्वारा राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखंड श्रीनगर का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया। उपसमिति के 10 सदस्यीय दल का नेतृत्व संसद सदस्य राज्य सभा रामचन्द्र जांगडा ने किया। बैठक में एनआईटी, उत्तराखंड की ओर से निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी आदि ने हिस्सा लिया।

# राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

**श्रीनगर गढ़वाल( संवाददाता )।** तकनीकी शिक्षा में हिंदी भाषा के प्रचार - प्रसार एवं राजभाषा के रूप में सरकारी कामकाज में इसके प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्रों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। इन्हीं विचारों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखंड में राजभाषा अनुभाग एवं संकाय कल्याण विभाग द्वारा संयुक्त रूप से एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह संस्थान के प्रशासनिक भवन में स्थित सम्मलेन कक्ष में पारम्परिक रूप से दीप प्रज्वलन के साथ किया गया जिसमे संस्थान के निदेशक प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी बतौर मुख्य अतिथि, जगदीश राम पौरी, संयुक्त निदेशक, राजभाषा, शिक्षा मंत्रालय एवं मुकेश राते, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, शिक्षा मंत्रालय मुख्य व्याख्याता और विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में प्रोफेसर अवस्थी कहा कि भाषाई विविधता के बीच हिंदी भाषा, देश में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं में, सबसे अधिक प्रचलित और बोली जाने वाली भाषा है इसीलिए 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को राजकीय भाषा के रूप में स्वीकार किया और किसी देश की प्रगति में उसकी भाषा और संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है हिंदी ने देश के सतत विकास में सदा ही अपना योगदान दिया है इसीलिए वह हमारी राजभाषा के साथ राष्ट्रीय एकता की भी भाषा है, हिंदी भाषा में तकनीकी शिक्षा की पढाई में जो सबसे बड़ी बाधा है वह यह है कि आधुनिक और गुणवत्तापूर्ण तकनिकी ज्ञान की पुस्तके हिंदी भाषा में मौजूद नहीं है। प्रारंभिक स्तर पर सभी बच्चों की बौद्धिक क्षमता लगभग सामान होती परन्तु हिंदी माध्यम से बारहवीं तक पढाई करने के बाद जब छात्र इंजीनियरिंग या मेडिकल की पढाई करने जाता है तो हिंदी माध्यम में किताबो के ना होने से उसके सामने चुनौती बढ़ जाती है और कई बार उसके प्रदर्शन में गिरावट आ जाती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नयी शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा में भारतीयता और भारतीय सन्दर्भ में शिक्षण पर विशेष जोर दिया है। जिसके अंतर्गत अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद एवं शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अंग्रेजी में उपलब्ध ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी पुस्तकों का हिंदी के साथ अन्य भारतीय भाषाओ में रूपांतरण को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। उन्होंने सभी संकाय सदस्यों से कहा कि कि इंजीनियरिंग प्रथम वर्ष के लिए हिंदी माध्यम में पुस्तके उपलब्ध भी है और उसकी ई-कॉपी नाममात्र के मूल्य पर खरीदी जा सकती। प्रोफेसर अवस्थी ने कहा कि इसी कड़ी में एन आई टी उत्तराखंड भी तकनीकी और विज्ञान की गतिविधियों के साथ हिंदी में लिखने के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहन देने कि लगातार प्रयत्न कर रहा है। जिसके लिए संस्थान में विभिन्न प्रकार के प्रभावी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है साथ ही हिंदी को पत्र व्यवहार और सूचना के आदान प्रदान के लिए एक माध्यम के रूप में सुनिश्चित किया गया है। संस्थान के वेब पोर्टल पर हिंदी में भी जानकारी दी जा रही है, सारे पत्राचार अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी किये जा रहे है और वार्षिक प्रतिवेदन का हिंदी संस्करण भी संस्थान में प्रतिवर्ष उपलब्ध कराया जाता है। जगदीश राम पौरी ने उपस्थित लोगो को सम्बोधित किया और राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए भारत सरकार द्वारा राजभाषा अधिनियम की विभिन्न धाराओं में व्यक्त राजभाषा संबंधी प्रावधानों के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा की आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में भारत सरकार ने वर्ष 2023 के अंत तक सभी हिंदी भाषी राज्यों जैसे उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश, बिहार आदि में शत प्रतिशत प्रशासनिक पत्राचार हिंदी माध्यम में करने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने उपस्थितों लोगो को यह भी बताया कि राजभाषा संबंधी निर्देशों के अनुपालन में प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार की नीति को अपनाया गया है, लेकिन जान-बूझकर निर्देशों का उल्लंघन पाए जाने पर दंडात्मक कार्रवाई करने का प्रावधान भी रखा गया है। इसके अतिरिक्त जगदीश राम पौरी ने अपने व्याख्यान के दौरान हिन्दी में अभिलेखों/फाईलों/पत्रों/परिपत्रों पर कार्य करने हेतु वह अपना ज्ञान और अनुभव साझा किया।

हिन्दी कार्यशाला में उपस्थित गणमान्य अथिति।

कार्यक्रम के संचालक एवं प्रभारी कुलसचिव डॉ धर्मेंद्र त्रिपाठी ने सभी लोगो का धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा कि राजभाषा कार्यान्वयन भारतीय संविधान के निर्देशों के अनुपालन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और सरकारी काम काज में हिंदी का अच्छे से उपयोग हो सके इसके लिए हिंदी भाषा का प्रशिक्षण और अभ्यास आवश्यक है।

# हिंदी में कार्यों को संतोषजनक पाया

**जागरण संवाददाता, श्रीनगर गढ़वाल:** राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआइटी) उत्तराखंड श्रीनगर में राजभाषा हिंदी में किए जा रहे कार्यों और हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने को लेकर संस्थान की ओर से किए जा रहे प्रयासों का संसदीय राजभाषा समिति की पहली उपसमिति ने निरीक्षण किया। राज्यसभा के सदस्य सांसद रामचंद्र जांगड़ा के नेतृत्व में संसदीय समिति के 10 सदस्यीय सदस्यों ने एनआइटी श्रीनगर में राजभाषा हिंदी के नीति संबंधी निर्देशों के अनुपालन और कार्यान्वयन को लेकर किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की। एनआइटी उत्तराखंड श्रीनगर के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने संस्थान में हिंदी में किए जा रहे कार्यों के साथ ही संस्थान की अन्य गतिविधियों और उपलब्धियों के बारे में भी समिति के सदस्यों को बताया।

प्रो. अवस्थी ने कहा कि एनआइटी उत्तराखंड में तकनीकी और विज्ञान की गतिविधियों में हिंदी के प्रावधानों के क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के प्रयास निरंतर किए जा रहे हैं, जिसके लिए फैकल्टियों और कर्मचारियों को हिंदी लेखन में प्रोत्साहित करने के साथ ही विशेषज्ञ व्याख्यान और प्रशिक्षण कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती हैं। उन्होंने बताया कि संस्थान की वेबसाइट पर अंग्रेजी और हिंदी में जानकारियां देने के साथ ही पत्राचार, निविदा प्रक्रिया, विज्ञापन और संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन में हिंदी को एक माध्यम के रूप में सुनिश्चित किया जाता है। संसदीय राजभाषा समिति के अध्यक्ष सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने एनआइटी के अधिकारियों और फैकल्टियों को निर्देश देते हुए कहा कि राजभाषा हिंदी के बेहतर प्रयोग को लेकर दिशा निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन किया जाए और राजभाषा विभाग की ओर से निर्धारित वार्षिक लक्ष्यों को शत प्रतिशत हासिल किया जाए।

एनआइटी के कुलसचिव डा. धर्मेंद्र त्रिपाठी ने हिंदी भाषा को लेकर किए जा रहे कार्यों को लेकर संस्थान की ओर से संबंधित प्रपत्र समिति के सदस्यों के सम्मुख प्रस्तुत किए। समिति के सदस्यों ने कहा कि अभी इस दिशा में और ज्यादा ठोस प्रयास करने की भी जरूरत है। डा. धर्मेंद्र त्रिपाठी ने समिति के सदस्यों को संस्थान की ओर से आश्वस्त करते हुए कहा कि समिति की ओर से दिए गए सुझावों और दिशा निर्देशों का प्राथमिकता से पालन किया जाए।

# राजकीय कार्यों में हिन्दी के बेहतर प्रयोग पर जोर

श्रीनगर। संसदीय राजभाषा समिति की पहली उपसमिति द्वारा राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखंड श्रीनगर का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया। उपसमिति के 10 सदस्यीय दल का नेतृत्व संसद सदस्य राज्य सभा रामचन्द्र जांगडा ने किया। इस दौरान हुई बैठक में एनआईटी, उत्तराखंड की ओर से निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी एवं प्रभारी कुलसचिव डॉ. धर्मेंद्र त्रिपाठी व संस्थान के राजभाषा प्रकोष्ठ के अधिकारियो ने भाग लिया। समिति के सदस्यों ने एनआईटी में राजभाषा नीति संबंधी निर्देशों के अनुपालन एवं प्रगामी कार्यान्वयन हेतु किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की गई।

निरीक्षण बैठक में सांसद जांगडा ने सभी सरकारी कार्यालयों को राजकीय कार्यों एवं क्रियाकलापों में राजभाषा हिन्दी के बेहतर प्रयोग द्वारा राजभाषा नीति संबंधी निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन, वार्षिक लक्ष्यों को शत प्रतिशत पूरा करने का निर्देश दिया।

# संसदीय राजभाषा समिति ने किया एनआईटी का निरीक्षण

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) पहुंची 10 संसदीय राजभाषा समिति ने एनआईटी का निरीक्षण किया। समिति ने एनआईटी की ओर से हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए किए गए कार्यक्रमों की पत्रावलियों की जांच की।

समिति का नेतृत्व कर रहे राज्यसभा सदस्य रामचंद्र जांगडा व समिति के अन्य सदस्यों ने एनआईटी उत्तराखंड में राजभाषा नीति संबंधी निर्देशों के अनुपालन एवं क्रियाकलापों की समीक्षा की।

एनआईटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने बताया कि एनआईटी में तकनीक और विज्ञान की गतिविधियों के साथ सरकार की राजभाषा नीति के प्रावधानों का क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए निरंतर प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए संस्थान में विशेषज्ञ व्याख्यान, प्रशिक्षण कार्यशाला जैसे कई कार्यक्रमों से संकाय सदस्यों और कर्मचारियों को हिंदी लेखन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

संस्थान की वेबसाइट पर हिंदी और अंग्रेजी माध्यम से जानकारी दी जा रही है। समिति का नेतृत्व कर रहे जांगडा ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए और अधिक प्रयास करने के निर्देश दिए। कार्यक्रम में प्रभारी कुलसचिव डॉ. धर्मेंद्र त्रिपाठी और संस्थान के राजभाषा प्रकोष्ठ के अधिकारी मौजूद थे। संवाद

# देश की प्रगति के लिए भाषा व संस्कृति को बताया महत्वपूर्ण

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखंड में तकनीकी शिक्षा में हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार एवं राजभाषा के रूप में सरकारी कामकाज में इसके प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।

संस्थान के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा कि किसी देश की प्रगति में उसकी भाषा और संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा मंत्रालय राजभाषा प्रकोष्ठ के जगदीश राम पौरी ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में केंद्र सरकार ने 2023 के अंत तक सभी हिंदी भाषी राज्यों में शतप्रतिशत प्रशासनिक पत्राचार हिंदी माध्यम में करने का लक्ष्य रखा है।

इस मौके पर वरिष्ठ अनुवादक अधिकारी मुकेश राते व एनआईटी के प्रभारी कुलसचिव डॉ. धर्मेंद्र त्रिपाठी ने भी हिंदी भाषा के प्रयोग और महत्व पर विचार रखे। संवाद

# पर्यावरण के अनुरूप जीवनशैली में बदलाव का लिया संकल्प

**जागरण संवाददाता, श्रीनगर गढ़वाल:** राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड श्रीनगर (एनआइटी) में संस्थान के स्पोर्ट्स क्लब की ओर से रस्साकसी, कैरम, जैवलिंग थ्रो, शार्टपुट, ट्रैक एंड फील्ड इवेंट की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इस अवसर पर छात्रों, संस्थान निदेशक, फैकल्टियों और संस्थान के कर्मचारियों ने पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने को लेकर पर्यावरण के अनुकूल अपनी जीवनशैली में बदलाव लाने का संकल्प लिया।

एनआइटी निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा कि पर्यावरण के अनुरूप व्यक्तिगत और सामुदायिक व्यवहार को बदलने से पर्यावरण और जलवायु संकट का समाधान किया जा सकता है। पानी संरक्षक, ऊर्जा संरक्षण, कम कचरे का उत्पादन, सिंगल यूज प्लास्टिक का परित्याग, स्वस्थ जीवनशैली के पालन पर भी प्रो. अवस्थी ने विशेष जोर दिया।

एनआइटी के कुलसचिव डा. धर्मेंद्र ने कहा कि आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराना ही हमारा कर्तव्य है। पर्यावरण के प्रति सभी लोगों को अपने व्यक्तिगत उत्तरदायित्व का निर्वहन करना चाहिए।

# जलवायु परिवर्तन वैश्विक समस्या

श्रीनगर/एसएनबी।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखंड में पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा दिए जाने को लेकर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर छात्रों, संकाय सदस्यों ने पर्यावरण को सुरक्षित और संरक्षित करने की शपथ दिलाई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए एनआईटी निदेशक ने कहा कि जलवायु परिवर्तन एक ऐसी वैश्विक समस्या है जो दुनिया भर की आबादी और पारिस्थितिक तंत्र को प्रभावित करती है। केवल व्यक्तिगत और सामुदायिक व्यवहार को बदलने से ही पर्यावरण और जलवायु संकट का समाधान किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस शपथ का उद्देश्य संस्थान के छात्रों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों के बीच पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करना है। जिससे कि वे विभिन्न विषयों जैसे ऊर्जा, पानी संरक्षण, सिंगल यूज प्लास्टिक का परित्याग, स्वच्छ एवं स्वस्थ खाद्य प्रणाली को अपनाना, कम कचरा उत्पन्न करना, स्वस्थ जीवन शैली आदि का पालन कर सके और प्राकृतिक संरक्षण में अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर सके। इस अवसर पर संस्थान के स्पोर्ट्स क्लब द्वारा स्नूकर, कैरम, रस्साकशी, और अन्य ट्रैक एंड फील्ड इवेंट जैसे डिस्कस थ्रो, जेवेलिन थ्रो और शॉटपुट थ्रो आदि विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संचालक एवं प्रभारी कुलसचिव डा. धर्मेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित वातावरण प्रदान करना हम सभी लोगों का कर्त्तव्य है। उन्होंने पर्यावरण के प्रति सभी लोगों को अपने व्यक्तिगत उत्तरदायित्व का निर्वहन करते हुए और इसके संरक्षण-संवर्धन में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने की बात कही।

**दुनिया की आबादी व परिस्थितिक तंत्र हो रहा है प्रभावित**

**सामुदायिक व्यवहार को बदलने से ही होगा जलवायु संकट का समाधान**

**छात्र-छात्राओं ने ली पर्यावरण बचाने की शपथ**

# सबसे तेज प्रधान टाइम्स

## राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान श्रीनगर द्वारा स्पोर्ट्स क्लब में विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया

गबर सिंह भण्डारी

**हरिद्वार/श्रीनगर गढ़वाल (सबसे तेज प्रधान टाइम्स)।** राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड में आयोजित एक कार्यक्रम में निदेशक प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी के नेतृत्व में छात्रों, संकाय सदस्यों और अन्य कर्मचारियों ने पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए अपनी जीवन शैली में ऐसे आवश्यक बदलाव करने का संकल्प लिया जो पर्यावरण के अनुकूल हो।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर अवस्थी ने कहा जलवायु परिवर्तन एक ऐसी वैश्विक समस्या है जो दुनिया भर की आबादी और पारिस्थितिक तंत्र को प्रभावित करती है। केवल व्यक्तिगत और सामुदायिक व्यवहार को बदलने से ही पर्यावरण और जलवायु संकट का समाधान किया जा सकता है उन्होंने आगे कहा कि इस शपथ का उद्देश्य संस्थान के छात्रों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों के बीच पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करना है जिससे कि वे विभिन्न विषयों जैसे ऊर्जा, पानी संरक्षण, सिंगल यूज प्लास्टिक का परित्याग, स्वच्छ एवं स्वस्थ खाद्य प्रणाली को अपनाना, कम कचरा उत्पन्न करना, स्वस्थ जीवन शैली आदि का पालन कर सके और प्राकृतिक संरक्षण में अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर सके । इस अवसर पर संस्थान के स्पोर्ट्स क्लब द्वारा विभिन्न खेल प्रतियोगिताओ जैसे स्नूकर, कैरम, रस्साकशी, और अन्य ट्रैक एंड फील्ड इवेंट जैसे डिस्कस थ्रो, जेवेलिन थ्रो और शॉटपुट थ्रो आदि का आयोजन किया गया और विजेताओं को निदेशक द्वारा पदक देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के संचालक एवं प्रभारी कुलसचिव ने कहा कि आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित वातावरण प्रदान करना हम सभी लोगो का कर्त्तव्य है। उन्होंने आग्रह किया कि पर्यावरण के प्रति सभी लोगो अपने व्यक्तिगत उत्तरदायित्व का निर्वहन करे और इसके संरक्षण -संवर्धन में अपना योगदान दे।

# सबसे तेज प्रधान टाइम्स

## राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान श्रीनगर में बीटेक चतुर्थ वर्ष के छात्रों के लिए विदाई समारोह का आयोजन

गबर सिंह भण्डारी

**हरिद्वार/श्रीनगर गढ़वाल (सबसे तेज प्रधान टाइम्स)।** राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान श्रीनगर ने परिसर स्थित सभागार में बीटेक चतुर्थ वर्ष बैच के छात्रों के लिए एक अविस्मरणीय विदाई समारोह का आयोजन किया। हर बार जब कोई बैच यहाँ से पास होकर निकलता है, तो यह वास्तव में यह हम सब के लिए मिश्रित भावनाओं वाला पल होता है। हमें खुशी और दुख दोनों महसूस होते हैं। एक तरफ आपके लक्ष्य पूरा करने और स्नातक होने की खुशी होती है तो दूसरी ओर, स्वतंत्र रूप से अपने जीवन की जिम्मेदारी लेने और एक नई यात्रा की शुरुआत के लिए हमें आपको अलविदा कहने का समय होता है। यह बात प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी, निदेशक एन आई टी उत्तराखंड ने बी टेक चतुर्थ वर्ष के छात्रों के लिए आयोजित विदाई समरोह के दौरान कही। राष्ट्रिय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड में 19 मई 2023 को पॉलिटेक्निक परिसर स्थित सभागार में बी टेक चतुर्थ वर्ष (2019-2023 बैच) के छात्रों के लिए एक अविस्मरणीय विदाई समारोह का आयोजन किया गया, जिसकी मेजबानी संस्थान के छात्र कल्याण अनुभाग और सांस्कृतिक कार्यक्रम अनुभाग के नेतृत्व में तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा

बहुत व्यवस्थित और शानदार तरीके से की गयी। कार्यक्रम की शुरुआत के निदेशक, प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी के स्वागत के साथ हुई। इसके बाद निदेशक महोदय ने विभिन्न पहलुओं पर छात्रों का मार्गदर्शन किया। अपने प्रेरक सम्बोधन में उन्होंने कहा मेरे प्यारे छात्रों, राष्ट्र को आप जैसे अधिक बुद्धिमान, तकनीकी रूप से कुशल युवाओं की जरूरत है। मैं आप सभी को सलाह देता हूं कि जीवन में पीछे मुड़कर कभी न देखें। बस आगे देखो और दुनिया को देखने के लिए आगे बढ़ो। हम सभी की शुभकामनाएं सदैव आपके साथ हैं।

इस अवसर पर प्रोफेसर अवस्थी ने मातृ संस्था के उत्थान में पूर्व छात्रों की भूमिका पर जोर देते हुए अंतिम वर्ष के छात्रों से अपनी मातृ संस्था के उत्थान में योगदान देने का आग्रह किया। उन्होंने छात्रों से कहा कि उन्हें घरेलू और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा से अर्जित अपने अनुभव और ज्ञान को संस्थान के छात्रों से साझा करना चाहिए ताकि वे भी वर्तमान प्रतिस्पर्धी और पेशेवर दुनिया की चुनौतियां का सामना करने के लिए तैयार हो सके।

परसेप्शन और ब्रांड बिल्डिंग में सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका का जिक्र करते हुए प्रोफेसर अवस्थी ने छात्रों से यह भी आग्रह किया कि वे व्हाट्सप्प, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, ट्विटर आदि सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर इंस्टिट्यूट के अकाउंट को फॉलो करे और जो सही लगे उसे लाइक या शेयर करे। इससे वे एक तरफ संस्थान में हो रहे अद्यतन क्रियाकलापो से भी अवगत होंगे साथ ही संस्थान के परसेप्शन सुधार और ब्रांड बिल्डिंग में भी अपना योगदान देंगे। इस अवसर पर चतुर्थ वर्ष के छात्रों ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि कॉलेज का अंतिम वर्ष उनके लिए एक भावनात्मक समय होता है क्योंकि वे कैंपस में ऐसी यादें संजोते हैं जिन्हें वे जीवन पर्यन्तसंजो कर रखेंगे। संस्थान के शैक्षणिक संरचना के बारे में एक अंतिम वर्ष के छात्र ने कहा कि एन आई उत्तराखंड की शैक्षणिक संरचना काफी लचीली है। प्रारंभिक वर्षों में छात्र शैक्षणिक कार्यभार और क्लब गतिविधियों में थोड़ा व्यस्त रहते हैं। परन्तु, अंतिम वर्ष में शैक्षणिक भार तुलनात्मक रूप से कम होता है।और यह वर्ष मुख्यत: प्लेसमेंट और इंटर्नशिप गतिविधियों के लिए होता है।

डीन स्टूडेंट वेलफेयर डॉ धर्मेंद्र त्रिपाठी ने अंतिम वर्ष के छात्रों के उज्जवल भविष्य की कामना की और आशा व्यक्य किया कि वे सभी पुरातन छात्र के रूप वापस आएंगे, कैंपस का दौरा करेंगे, अपना हाल चाल और कड़ी मेहनत से प्राप्त ज्ञान को यहां के छात्रों के साथ साझा करेंगे।

इस कार्यक्रम में डॉ जी एस बरार (डीन प्लानिंग एंड डेवलपमेंट), डॉ सन्त अग्रवाल( डीन रिसर्च × कंसल्टेंसी), डॉ हरिहरन मुथुसामी (डीन फैकल्टी वेलफेयर) डॉ लालता प्रसाद (डीन अकादमिक), डॉ राकेश मिश्रा (एसोसिएट डीन स्टूडेंट वेलफेयर), डॉ नितिन शर्मा (कोऑर्डिनेटर कल्चरल क्लब) केअलावा सभी विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य और अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।

# एनआईटी में छात्रों के विदाई समारोह का आयोजन

**छात्रों ने रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुति देकर सीनियरों को विदाई दी**

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखंड के (2019-2023 बैच) के छात्रों के विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर संस्थान के छात्र कल्याण अनुभाग और सांस्.तिक कार्यक्रम अनुभाग के नेतृत्व में तृतीय वर्ष के छात्रों ने रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुति देकर सीनियरों को विदाई दी।

इस मौके पर बतौर मुख्य अतिथि एनआईटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने छात्रों का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि राष्ट्र को आप जैसे अधिक बुद्धिमान, तकनीकी रूप से कुशल युवाओं की जरूरत है। उन्होंने छात्रों से जीवन में पीछे मुड़कर कभी न देखने और तरक्की कर दुनियां देखने के लिए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर प्रो. अवस्थी ने मातृ संस्था के उत्थान में पूर्व छात्रों की भूमिका पर जोर देते हुए अंतिम वर्ष के छात्रों से अपनी मातृ संस्था के उत्थान में योगदान देने का आग्रह किया। इस अवसर पर डा. जीएस बरार, डा. सनत अग्रवाल, डा. हरिहरन मुथुसामी, डा. लालता प्रसाद, डा. राकेश मिश्रा, डा. नितिन शर्मा सहित आदि मौजूद थे।

# बीटेक चतुर्थ वर्ष के छात्र-छात्राओं को दी विदाई

**श्रीनगर।** एनआईटी (राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान) उत्तराखंड में बीटेक चतुर्थ बैच के छात्र-छात्राओं का विदाई समारोह आयोजित किया गया। एनआईटी सभागार में छात्र कल्याण अनुभाग और सांस्कृतिक कार्यक्रम अनुभाग के नेतृत्व में बीटेक तृतीय वर्ष के छात्रों ने कार्यक्रम आयोजित कर सीनियर छात्रों को विदाई दी। इस अवसर पर निदेशक प्रो. एलके अवस्थी, अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. धर्मेंद्र त्रिपाठी, डॉ.जीएस बरार, डॉ. सनत अग्रवाल, डॉ. हरिहरन मुथुसामी, डॉ. लालता मौजूद रहे। संवाद

# राष्ट्र को कुशल युवाओं की जरूरतः अवस्थी

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखंड के (2019-2023 बैच) के छात्रों के विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर संस्थान के छात्र कल्याण अनुभाग और सांस्कृतिक कार्यक्रम अनुभाग के नेतृत्व में तृतीय वर्ष के छात्रों ने रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुति देकर वरिष्ठ छात्रों को विदाई दी।

इस मौके पर बतौर मुख्य अतिथि एनआईटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने छात्रों का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि राष्ट्र को बुद्धिमान व तकनीकी रूप से कुशल युवाओं की जरूरत है। उन्होंने छात्रों से तरक्की आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

# अपने ज्ञान से संस्थान के विकास में सहयोगी बनें : प्रो. अवस्थी

श्रीनगर गढ़वालः राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआइटी) उत्तराखंड श्रीनगर के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने बीटेक चतुर्थ वर्ष के छात्रों को भावी जीवन की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उनकी एक नई यात्रा की शुरुआत हो रही है। यह पल हम सबके लिए मिश्रित भावनाओं वाला भी होता है। एनआइटी के डीन स्टूडेंट वेलफेयर के तत्वावधान में बीटेक तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा चतुर्थ वर्ष के छात्रों के लिए आयोजित विदाई समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने यह विचार व्यक्त किए। इस मौके पर एनआइटी के डीन स्टूडेंट वेलफेयर डा. धर्मेंद्र त्रिपाठी, डीन फैकल्टी वेलफेयर डा. हरिहरन मुथुसामी, डीन एकेडमिक डा. लालता प्रसाद, डीन प्लानिंग एण्ड डवलपमेंट डा. जीएस बरार आदि मौजूद रहे। (जासं)

# एनआईटी के पांच पूर्व छात्रों का सिविल सेवा में चयन

श्रीनगर। संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की ओर से आयोजित सिविल सेवा परीक्षा 2023 में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखंड के पांच पूर्व छात्र-छात्राओं का चयन हुआ है।

देवव्रत जोशी (बीटेक सिविल इंजीनियरिंग) ने 125वीं, मानिया वर्मा (बीटेक मैकेनिकल इंजीनियरिंग) ने 258वीं, मीनाक्षी आर्य (बीटेक कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग) ने 444वीं, विपिन दुबे (बीटेक सिविल इंजीनियरिंग) ने 708वीं और आदित्य दोहर (बीटेक मैकेनिकल इंजीनियरिंग) ने 834 रैंक हासिल की है। संस्थान के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा कि प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा में चयन बड़ी कामयाबी है। सभी चयनित छात्रों की देश के प्रति जिम्मेदारी और ज्यादा बढ़ गई है।

उन्होंने एनआईटी परिवार की ओर से चयनित छात्रों और उनके परिजनों को बधाई दी। संवाद

# एनआईटी के 5 पास आउट छात्र सफल

श्रीनगर। संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा 2023 में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखंड श्रीनगर के पांच पास आउट छात्रों का चयन हुआ है।

जिस पर एनआईटी के निदेशक प्रो. एलके अवस्थी, कुलसचिव डा. धर्मेंद्र त्रिपाठी व अन्य अधिकारियों ने खुशी व्यक्त की है। एनआईटी कुलसचिव डा. धर्मेंद्र त्रिपाठी ने बताया कि एनआईटी की छात्रा रही मीनाक्षी आर्य देव व्रत जोशी, आदित्य दोहर, विपिन दुबे और मनिया वमा ने सफलता पाई है। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी ने कहा कि प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा में चयन एक बड़ी कामयाबी है।

# संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा 2023 में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, श्रीनगर उत्तराखंड के पांच छात्रों का चयन हुआ

हरि न्यूज/प्रदीप कुमार

श्रीनगर गढ़वाल। इस साल, सिविल सेवा परीक्षा के परिणाम घोषित होने के बाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखंड के पांच छात्रों का चयन किया गया है। मीनाक्षी आर्य, बी.टेक कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग, ने 444वीं रैंक, देव व्रत जोशी, बी.टेक, सिविल इंजीनियरिंग, 125वीं रैंक, आदित्य दोहर, बी.टेक, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, 834 रैंक, विपिन दुबे, बी.टेक, सिविल इंजीनियरिंग, 708 रैंक और मनिया वर्मा बी.टेक, मैकेनिकल इंजीनियरिंग ने २५८ वीं रैंक हासिल करके संस्थान का नाम रोशन किया है। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी ने कहा "प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा में चयन एक बड़ी कामयाबी है। सभी चयनित छात्रों की देश के प्रति जिम्मेदारी और ज्यादा बढ़ गई है। मुझे विश्वास है की सभी चयनित छात्र समस्त चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे और भारत देश को सशक्त एवं आत्म-निर्भर राष्ट्र बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे" उन्होंने कहा "पूरे एनआईटी परिवार की तरफ से सभी चयनित छात्रों और उनके परिजनों को बहुत बहुत बधाइयाँ। मैं सभी सफल छात्रों के उज्जवल और गौरवशाली भविष्य की कामना करता हूँ। प्रोफेसर अवस्थी ने कहा की संस्थान सभी क्षेत्रों में होनहार छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए हर क्षेत्र में उनको पोषित करता है। और इस तरह वे सिविल सेवा के क्षेत्र में भी अपना योगदान दे रहे हैं। उन्होंने कहा की पहले भी संस्थान के छात्रों का सिविल सेवा में चयन हुआ है परन्तु इस बार के घोषित परिणाम में बड़ी कामयाबी मिली है। प्रोफेसर अवस्थी ने आशा व्यक्त किया की इन छात्रों कि सफलता संस्थान के अन्य छात्रों में को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करेगी। संस्थान के प्रभारी सचिव डॉ धर्मेंद्र त्रिपाठी,ने भी छात्रों के चयन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी और कहा की दोनों छात्रों ने न केवल एन आई टी उत्तराखंड [illegible] ने संस्थान के शिक्षकों को भी गौरवान्वित होने का अवसर दिया है। इस मौके पर संस्थान के एलुमनी अनुभाग के समन्वयक डॉ महेराज सिंह रावत, इलेक्ट्रिकल, सिविल एवं मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्षों और संस्थान के समस्त संकाय सदस्यों ने भी सभी चयनित छात्रों को बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। एनआईटी, उत्तराखंड के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए छात्रों ने कहा कि " एनआईटी उत्तराखंड का शैक्षणिक स्तर भारत के किसी भी अन्य प्रमुख शैक्षणिक संस्थान के बराबर है। यहाँ अध्ययन के दौरान जो भी ज्ञान और कौशल प्राप्त किया, उससे यूपीएससी परीक्षा उत्तीर्ण करने में काफी मदद मिली। चयनित छात्रों ने बताया की एन आई टी में केवल प्रौद्योगिकी के ही बारे में नहीं है बल्कि समस्या समाधान के तरीकों के प्रति एक नजरिया विकसित करने पर जोर दिया जाता है। इस तरह के दृष्टिकोण छात्रों की क्षमता निर्माण में मदद करते हैं और सेवाकाल के दौरान सामने आने वाली समस्याओं को हल करने में भी सहायक होते हैं।

# सबसे तेज प्रधान टाइम्स

## संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा 2023 में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, श्रीनगर उत्तराखंड के पांच छात्रों का चयन हुआ

गबर सिंह भण्डारी

**हरिद्वार/पौडी/श्रीनगर गढ़वाल (सबसे तेज प्रधान टाइम्स)।** इस साल, सिविल सेवा परीक्षा के परिणाम घोषित होने के बाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखंड के पांच छात्रों का चयन किया गया है। मीनाक्षी आर्य, बी.टेक कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग, ने 444वीं रैंक, देव व्रत जोशी, बी.टेक, सिविल इंजीनियरिंग, 125वीं रैंक, आदित्य दोहर, बी.टेक, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, 834 रैंक, विपिन दुबे, बी.टेक, सिविल इंजीनियरिंग, 708 रैंक और मनिया वर्मा बी.टेक, मैकेनिकल इंजीनियरिंग ने 258 वीं रैंक हासिल करके संस्थान का नाम रोशन किया है।

संस्थान के निदेशक प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी ने कहा प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा में चयन एक बड़ी कामयाबी है। सभी चयनित छात्रों की देश के प्रति जिम्मेदारी और ज्यादा बढ़ गई है। मुझे विश्वास है की सभी चयनित छात्र समस्त चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे और भारत देश को सशक्त एवं आत्म-निर्भर राष्ट्र बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे।उन्होंने कहा पूरे एनआईटी परिवार की तरफ से सभी चयनित छात्रों और उनके परिजनों को बहुत बहुत बधाइयाँ। मैं सभी सफल छात्रों के उज्जवल और गौरवशाली भविष्य की कामना करता हूँ।

प्रोफेसर अवस्थी ने कहा की संस्थान सभी क्षेत्रों में होनहार छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए हर क्षेत्र में उनको पोषित करता है। और इस तरह वे सिविल सेवा के क्षेत्र में भी अपना योगदान दे रहे हैं। उन्होंने कहा की पहले भी संस्थान के छात्रों का सिविल सेवा में चयन हुआ है परन्तु इस बार के घोषित परिणाम में बड़ी कामयाबी मिली है। प्रोफेसर अवस्थी ने आशा व्यक्त किया की इन छात्रों कि सफलता संस्थान के अन्य छात्रों में को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

संस्थान के प्रभारी सचिव डॉ धर्मेंद्र त्रिपाठी,ने भी छात्रों के चयन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी और कहा की दोनों छात्रों ने न केवल एन आई टी उत्तराखंड का नाम रोशन किया अपितु उनकी उपलब्धि ने संस्थान के शिक्षकों को भी गौरवान्वित होने का अवसर दिया है।

इस मौके पर संस्थान के एलुमनी अनुभाग के समन्वयक डॉ महीराज सिंह रावत, इलेक्ट्रिकल, सिविल एवं मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्षों और संस्थान के समस्त संकाय सदस्यों ने भी सभी चयनित छात्रों को बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। एनआईटी, उत्तराखंड के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए छात्रों ने कहा कि एनआईटी उत्तराखंड का शैक्षणिक स्तर भारत के किसी भी अन्य प्रमुख शैक्षणिक संस्थान के बराबर है। यहाँ अध्ययन के दौरान जो भी ज्ञान और कौशल प्राप्त किया, उससे यूपीएससी परीक्षा उत्तीर्ण करने में काफी मदद मिली चयनित छात्रों ने बताया की एन आई टी में केवल प्रौद्योगिकी के ही बारे में नहीं है बल्कि समस्या समाधान के तरीकों के प्रति एक नजरिया विकसित करने पर जोर दिया जाता है। इस तरह के दृष्टिकोण छात्रों की क्षमता निर्माण में मदद करते हैं और सेवाकाल के दौरान सामने आने वाली समस्याओं को हल करने में भी सहायक होते है।

दैनिक सरल एक्सप्रेस सिटीलाइव कोटद्वार-पौड़ी-रु

# राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, श्रीनगर से उत्तराखंड के पांच छात्रों का हुआ चयन

**दैनिक सरल एक्सप्रेस**
**गबर सिंह भंडारी**

**श्रीनगर गढ़वाल।** इस साल, सिविल सेवा परीक्षा के परिणाम घोषित होने के बाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखंड के पांच छात्रों का चयन किया गया है। मीनाक्षी आर्य, बी.टेक कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग, ने ४१४वीं रैंक देव व्रत जोशी, बी.टेक, सिविल इंजीनियरिंग, 125वीं रैंक, आदित्य दोड़र, बी. टेक, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, 834 रैंक, विपिन दुबे, बी.टेक, सिविल इंजीनियरिंग, 708 रैंक और मनिया वर्मा बी.टेक, मैकेनिकल इंजीनियरिंग ने २५८ वीं रैंक हासिल करके संस्थान का नाम रोशन किया है।

संस्थान के निदेशक प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी ने कहा प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा में चयन एक बड़ी कामयाबी है। सभी चयनित छात्रों की देश के प्रति जिम्मेदारी और ज्यादा बढ़ गई है। मुझे विश्वास है की सभी चयनित छात्र समस्त चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे और भारत देश को सशक्त एवं आत्म-निर्भर राष्ट्र बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे। उन्होंने कहा पूरे एनआईटी परिवार की तरफ से सभी चयनित छात्रों और उनके परिजनों को बहुत बहुत बधाइयाँ। मैं सभी सफल छात्रों के उज्जवल और गौरवशाली भविष्य की कामना करता हूँ। प्रोफेसर अवस्थी ने कहा की संस्थान सभी क्षेत्रों में होनहार छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए हर क्षेत्र में उनको पोषित करता है। और इस तरह वे सिविल सेवा के क्षेत्र में भी अपना योगदान दे रहे हैं। उन्होंने कहा की पहले भी संस्थान के छात्रों का सिविल सेवा में चयन हुआ है परन्तु इस बार के घोषित परिणाम में बड़ी कामयाबी मिली है। प्रोफेसर अवस्थी ने आशा व्यक्त किया की इन छात्रों कि सफलता संस्थान के अन्य छात्रों में को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करेगी। संस्थान के प्रभारी सचिव डॉ ६ मैं त्रिपाठी,ने भी छात्रों के चयन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी और कहा की दोनों छात्रों ने न केवल एन आई टी उत्तराखंड का नाम रोशन किया अपितु उनकी उपलब्धि ने संस्थान के शिक्षकों को भी गौरवान्वित होने का अवसर दिया है। इस मौके पर संस्थान के एलुमनी अनुभाग के समन्वयक डॉ महीराज सिंह रावत, इलेक्ट्रिकल, सिविल एवं मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्षों और संस्थान के समस्त संकाय सदस्यों ने भी सभी चयनित छात्रों को बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। एनआईटी, उत्तराखंड के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए छात्रों ने कहा कि " एनआईटी उत्तराखंड का शैक्षणिक स्तर भारत के किसी भी अन्य प्रमुख शैक्षणिक संस्थान के बराबर है। यहाँ अध्ययन के दौरान जो भी ज्ञान और कौशल प्राप्त किया, उससे यूपीएससी परीक्षा उत्तीर्ण करने में काफी मदद मिली चयनित छात्रों ने बताया की एन आई टी में केवल प्रौद्योगिकी के ही बारे में नहीं है बल्कि समस्या समाधान के तरीकों के प्रति एक नजरिया विकसित करने पर जोर देया जाता है। इस तरह के दृष्टिकोण छात्रों की क्षमता निर्माण में मदद करते हैं और सेवाकाल के दौरान सामने आने वाली समस्याओं को हल करने में भी सहायक होते है।